कुर्आने मजीद व हदीसों की रौशनी में

लेखक

फकीहे मिल्लत मुफती
जलालुद्दीन अहमद अमजदी

कुर्आने मजीद व ह़दीसों की रौशनी में

बदमज़हबों से रिश्ते

लेखक

मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी

दारूलऊलुम अमजदिया अरशदुलऊलूम

हैदरपुर ओझा गंज-बस्ती

हिन्दी कर्त्ता

मौलाना अनवार अह़मद क़ादिरी अमजदी

ह़ैदरपुर ओझागंज-बस्ती

इन्तिसाब

उन तमाम मुसलमानों के नाम जो अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सहाबये किराम व बुज़ुर्गाने दीन रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन से सच्ची मुहब्बत रखते है। और उनके दुश्मनों बदमज़हबों मुरतद्दों के यहाँ शादी विवाह करने से परहेज़ करते हैं।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

फ़िहरिस्ते माज़ामीन

नं॰	मज़मून	पेज
1	बद मज़हब और ह़दीसें	5
2	ह़दीसों का ख़ुलासा	6
3	मुरतद का हुक्म	7
4	अच्छी आ़दत	8
5	बहुत बड़ी बेवक़ूफी	11
6	मुरतद्दों से रिश्ते	16
7	शैतानी फ़रेब	18
8	बदमज़हब और मुरतद कौन	20
9	चकड़ालवी	21
10	क़ादियानी	22
11	राफ़िज़ी (शीआ)	22
12	ख़ारिजी	24
13	वहाबी देवबन्दी	25
14	वहीबी ग़ैर मुक़ल्लिद	27
15	तबलीग़ी जमाअ़त	28
16	मौदूदी जमाअ़त	28
17	सुल्ह कुल्ली	33
18	अल्लाह की लानत	33
19	हुज़ूर के रास्ते पर नहीं	34
20	सबसे कमज़ोर ईमान वाला	35
21	बुराई न रोकने पर अ़ज़ाब	36
22	तरह तरह के फ़रेब (धोखे)	40

पहली नज़र

आज कल बहुत से गुमराह व बदमज़हब अहले सुन्नत व जमाअत से मेल जोल करके उनके यहाँ शादी विवाह करने की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करते हैं ताकि उनको आसानी के साथ अपने जैसा अक़ीदा वाला बना सकें। और अवामे अहले सुन्नत अपनी बेवक़ूफी से उनके यहाँ रिश्ता कर लेते हैं। और इस तरह थोड़े ही दिनों में वह गुमराह व बदमज़हब होकर अल्लाह व रसूल और सहाबा व बुज़ुर्गाने दीन की बारगाह के गुसताख़ व बेअदब हो जाते हैं।

लिहाज़ा गुमराहों, बदमज़हबों और मुरतद्दों के साथ उठने बैठने और उनके यहाँ शादी विवाह करने के बारे में क़ुर्आन व हदीस का हुक्म अहलेसुन्नत व जमाअत को बताने के लिए यह किताब लिख दी ताकि वह उनसे दूर रहें और उनके यहाँ विवाह करके अपने ईमान को ख़तरह में न डालें।

दुआ है कि खुदाये तआला अहले सुन्नत व जमाअत को इस किताब से सही रास्ता देखाए और उनको अम्बिया सहाबा और बुज़ुर्गाने दीन के दुश्मनों से हर तरह दूर रहने की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन!

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

अल्लाह के नाम से शुरू जो रहमान व रहीम है

इन्सान दो तरह के होते हैं मुसलमान और काफिर—फिर काफिर भी दो तरह के होते हैं काफिरे असली और काफिरे मुरतद—काफिरे असली वह काफिरे है जो शुरु ही से कलमए इस्लाम को न मानता हो जैसे दहरिया, मजूसी, मुशरिक और यहूद व नसारा वग़ैरह। और काफिरे मुरतद भी दो तरह के होते हैं।

मुरतद मुजाहिर और मुरतद मुनाफिक़

मुरतद मुजाहिर वह काफिर है कि जो पहले मुसलमान था फिर खुल्लम खुल्ला इस्लाम से फिर गया और कलमए लाइला-ह इल्लल्लाह का इन्कार करके दहरिया, मुशरिक, मजूसी या किताबी वगैरह कुछ भी हो गया।—

और मुरतद मुनाफिक़ वह काफिर है जो कलमए लाइलाह इल्लल्लाह अब भी पढ़ता है अपने आप को मुसलमान ही कहता है मगर खुदावनदे कुदूस, हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या किसी नबी की तौहीन करता है या दीगर ज़ुरुरियाते दीन में से किसी बात का इन्कार करता है——काफिरों में सबसे बुरा यही मुरतद मुनाफिक़ हे जो मुसलमान बनकर कुफ्र सिखाता है और अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को गालियाँ देता है। अल—अयाज़ु बिल्लाहि तआला— सहीह मुसलमान और गुमराह—सहीह मुसलमान वह है जो ज़ुरुरियाते दीन को मानने के साथ—साथ तमाम

ज़ुरुरियाते अहले सुन्नत को भी मानता हो—और गुमराह मुसलमान वह बद मज़हब है जो ज़ुरुरियाते अहले सुननत में से किसी बात का इनकार करता हो मगर उसकी बदमज़हबी कुफ्र की हद तक न पहुंची हो।

बद मजहब और हदीसें

वह मुसलमान जो बद मज़हब है उनके बारे में रह़मते आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का हुक्म जानने के लिए इन ह़दीसों को प्रढ़ें।

१. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहु से रिवायत है कि सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम किसी बदमज़हब को देखो तो उस के सामने गुस्सा जाहिर करो इस लिए कि ख़ुदाए तआ़ला हर बद मज़हब को दुश्मन रखता है। (इबने असाकिर)

२. हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहु से रिवायत है कि रसूले अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदाए तआ़ला किसी बदमज़हब का न रोज़ह क़बूल करता है न नमाज़ न ज़कात न हज न उमरह न जिहाद और न कोई नफ्ल न फर्ज़ बदमज़हब दीने इस्लाम से ऐसा निकल जाता है जैसा कि गूँधे हुए आटे से बाल निकल जाता है (इब्ने माजा)

३. हज़रत अबू उमामह रज़ियल्लाहु तआ़ला अनहु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहुतआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बदमज़हब दोज़ख़ वालों के कुत्ते हैं (दार कुतनी)

४. हज़रत इबराहीमिबने मैसरह रज़ियल्लाहु तआला अ़नहु से रिवायत है कि रसूले करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तसलीम ने फ़रमाया जिसने किसी बदमज़हब की इज़्ज़त की तो उस ने इस्लामके ढाने पर मदद की (मिशकात शरीफ)

बदमजहब की इज़्ज़त करने से इस्लाम के ढाने पर मदद कैसे हो जाएगी इस सुवाल का जवाब देते हुए हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी अ़लैहिर्रहमतु वर्रिज़वान तहरीर फरमाते हैं कि बदमज़हब की इज़्ज़त करने में सुन्नत की तौहीन और उसकी बेइज़्ज़ती है और सुन्नत की तौहीन इस्लाम की बुनियाद ढ़ाने तक पहुंचा देती है। (अशेअतुल्लमआ़त जिल्द नं. 1 सफ़हा १४७)

५. हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहुसे रिवायत है कि रहमते आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया बदमज़हब अगर बीमार पड़े तो उनको देखने न जाओ। अगर मरजायें तो उनके जनाज़ह मे शरीक न हो उनसे भेंट हो तो उनसे सलाम न करो उनके पास न बैठो उनके साथ पानी न पियो। उन के साथ खाना न खाओ। उनके साथ शादी विवाह न करो। उनके जनाज़ह की नमाज़ न पढ़ो।

नोटः यह हदीस मुस्लिम, अबूदाऊद, इब्नेमाजा, उकैली और इब्ने हब्बान की रिवायतों का मज़मूआ है।

हदीसों का खुलासह

इन तमाम हदीसों का खुलासह यह हुआ कि सारे मुसलमानों में बदमज़हब सब से ज़्यादा बुरे हैं उनसे अचछे तरीका पर पेश आना जाइज़ नहीं कि खुदाए तआला उनको

दुश्मनरखता है औरउनकी कोई इबादत नही क़बूल फ़रमाता है चाहे फ़ज़्र हो या नफ़्ल । वह जहन्नामियों के कुत्ते हैं । उन की इज़्ज़त करना मज़हबे इस्लाम के ढ़ाने पर मदद करना है ।

इनका हर तरह से इसलामी बाईकाट किया जायेगा । यानि उन से किसी किस्म का मज़हबी तअ़ल्लुक रखना जाइज़ नहीं । उनसे सलाम करना और उनके साथ उठना बैठना और खाना पीना जाइज़ नहीं और उनके यहाँ शादी विवाह करना जाइज़ नहीं । सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का यह तमाम हुक्म उन लोगों के बारे में है कि जो बदमज़हब तो हैं मगर उनकी बदमज़हबी कुफ्र की हद को नहीं पहुँची है । रहे वह लोग जो कि मुरतद हैं तो उनके बारे में शरीअते इसलामिया का हुक्म बहुत सख़्त है ।

मुरतद का हुक्म

वह मुरतद कि जो खुल्लम खुल्ला इस्लाम से फिर गया और लाइला-ह इल्लल्लाह का इनकार कर दिया उस के बारे में हुक्म यह है कि इसलाम का हाकिम उसे तीन दिन क़ैद में रखे फिर अगर वह तौबह करके मुसलमान हो जाय तो बेहतर वरना उसे कत्ल कर दे । (दुर्रेमुखतार मऐ शामी जिल्द ३ सफा २८६)

और वह लोग जो कि अपने आप को मुसलमान ही कहते हैं और हमारी तरह् नमाज़ व रोज़ह भी करते हैं

मगरअल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की या किसी दोसरे नबी की तौहीन करके मुरतद हो गये तो वह चाहे सुन्नीबरैलवी कहे जाते हों या वहाबी देवबन्दी-बादशाहे इस्लाम उनकी तौबह नही कबूल करेगा । यानी उन्हें क़त्ल कर देगा। फक़ीहे आज़म हिन्द-मुरश्दी हजरत सदरुश्शीअह रहमतुल्लाह अलैहि तहरीर फरताते हैं । मुरतद अगर-इरतिदाद से तौबह करले तो उसकी तौबह मक़बूल है मगर कुछ मुरतद्दीन जैसे किसी नबी की शान में गुसताखी करने वाला-कि उसकी तौबह मक़बूल नहीं तौबह क़बूल करनेसे मुराद यह है कि तौबह करन के बाद बादशहे इस्लाम उसे कत्ल न करेगा (बहारे शरीअत जिल्द ९ सफहा १२७)

लेकिन नबी के गुसताख को कत्ल करना चूंकि बादशाहे इस्लाम का काम है और यह हमारे यहाँ नहीं हो सकता तो अब मौजूदह सूरत में मुसलमानों पर यह लाजिम है कि ऐसे लोगों का मज़हबी बाईकाट करें उनका ज़बीहा न खाएं उन के यहाँ शादी विवाह न करें उनकी नमाज़ जनाज़ह न पढ़ें और न मुसलमानों के कबरस्तान में उन्हें दफ़न होने दें ।

अच्छी आदत

अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दुशमनों बदमज़हबों और मुरतद्दों का मज़हबी बाइकाट करना उनसे दूर रहना, उनके यहाँ शादी विवाह न करना और उनके साथ सखती से पेश आना

बद अखलाकी नही है बल्कि अच्छी आदतों में से है कि अल्लाह तआ़ला और उस के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हमको यही हुक्म फरमाया है । और हमारे बुजुर्गों ने हम को यही सबक़ दिया है कि बदमज़हबों और मुरतद्दों से दूर रहो उनके यहाँ रिश्ता नाता करना तो बड़ी बात है उन के साथ उठना बैठना भी पसंद न करो । अल्लाह तआ़ला फरमाता है । और अगर शैतान तुम को भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम कौम के पास न बैठो (पारा रुकूअ १४)

औरअल्लाह तआला फरमाता है । और जालिमों की तरफ न झुको कि तुम्हें जहन्नम की आग छुयेगी । (पारह २१ रुकूअ १०)

और बद मजहबों के बारे में अच्छी आदत सिखाने वाले नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की पाँच ह़दीसें आप पहले पढ़ चुके हैं । इस जगह परमुस्लिम शरीफ की एक ह़दीस और पढ़ें । सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया ।

उनसे दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो कहीं वह तुम्हें गुमराह न कर दें। कहीं वह तुम्हें फितना में न डाल दें ।

और इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अलफे सानी हज़रत शैखअहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अ़लैहि लिखते हैं : "अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से फरमाया कि कुफ्र वालों पर सख्ती करो । तो रसूलेखुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम

जो कि अचछी आदत वाले हैं। उनको सख्ती करने के हुक्म फरमाने से मालूम हुआ कि कुफ्र वालों के साथ सख्ती से पेश आना अच्छी आदत में दाखिल है।

खुदा के दुश्मनों को कुत्ते की तरह दूर रख्खा जाये। उनके साथ दोस्ती व महब्बत अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दुश्मनी तक पहुंचा देती है। (कलमह व नमाज़ के सबब) आदमी समझता है कि वह मुसलमान है अल्लाह और रसूल पर ईमान रखता है (इसलिए उनसे दोस्ती और रिश्ता करता है) लेकिन वह यह नहीं जानता कि इस तरह की बेहूदा हरकतें उसके इस्लाम को बरबाद कर देती हैं (मकतूब न.१६३)

और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि "अमीरुल मूमिनीन उमर फारुके आज़म रजियल्लाहु तआला अनहु ने मस्जिदे अक़दस नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में नमाज़े मगरिब के बाद किसी मुसाफिर को भूका पाया। अपने साथ काशानये खिलाफत में ले आये। उसके लिए खाना मंगाया। जब वह खाना खाने बैठा कोई बात बदमज़हबी की उससे जाहिर हुई। फौरन हुक्म हुआ खाना उठा लिया जाये और इसे बाहर निकाल दिया जाये। सामने से खाना उठवा लिया और उसे निकलवा दिया (अलमलफूज़ जिल्द १ सफा न. ९४)

बदमज़हबों और मुरतदों से दूर रहने और उन को अपने से दूर रखने का हुक्म इसलिए है कि उन से मेल जोल रखने और उनके पास उठने बैठने से काफिर होकर मरने

का खतरा है । फतावा रज़विया दसवां हिस्सा सफहा ५७५ में है कि इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि शरहुस्सुदूर में फरमाते हैं कि एक शख्सराफजियों (शीओं) के पास बैठा करता था। उसके मरते वक्त लोगों ने उसे कलमए तैयवह की तलक़ीन की उस ने कहा नही कहा जाता। पूछा कियुं कहा यह दो शख्स खड़े हैं । यह कहते हैं तू उनके पास बैठा करता था जो अवूवकर व उमर रज़ियलल्लाहु अनहुमा को बुरा कहते थे अव चाहता है कलमह पढ़ कर उठे न पढ़ने देंगें –जव सिद्दीके अकवर व फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा को बुरा कहने वालों के पास बैठने वालों की यह हालत है तो जो लोग अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बुरा कहते है उनकी शान घटाते है। और उन्हें तरह तरह के ऐव लगाते हैं । उनके पास बैठनेवालों को कलमह नसीव होना और भी कठिन है।

और जब ऐसे लोगों के पास बैठने वालों को कलमह नसीव होना कठिन है तो जो लोग उनके यहाँ शादी विवाह करके दोस्ती व महब्वत का मजवूत क़िला वनाते हैं उन को कलमह नसीव होना और ज़ियादह कठिन है। खुदाए तआला ऐसे लोगों को ईमान की महब्वत अता फ़रमाए । आमीन ।

बहुत बड़ी बेवक़ूफी

वहुत से लोग अपनी वेवक़ूफी से यह समझते हैं कि

जो आदमी मुसलमान के घर पैदा हुआ और उसका नाम मुसलमानों की तरह है तो वह चाहे जैसा अक़ीदा रखे और अल्लाह व रसूल की शान में जो चाहे बके सच्चा पक्का मुसलमान ही रहेगा बदमज़हब व गुमराह और काफिर व मुरतद नहीं होगा । तो यह बहुत बड़ी बेवक़ूफी है ।

इबने जरीर, तबरानी, अबुशैख और इब्ने मरदवीयह रईसुल मुफस्सिरीन हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहुमा से रिवायत करते हैं कि कुछ लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शान में बेअदबी का लफ्ज़ बोले ।

हुज़ूर ने उनसे पूछा तो उन लोगों ने कसम खाई कि हम ने कोई कलमह हुज़ूर की शान में बेअदबी का नहीं कहा है । उस पर यह आयत अल्लाह तआ़ला की तरफ से उतरी। : खुदा की कसम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा। और बेशक जुरूर उन्होंने कुफ्र की बात कही और इसलाम में आने के बाद काफिर हो गये । (पारह १० रुकूअ़ १६)

देखिए अल्लाह तआ़ला ने खुल्लम खुल्ला फरमाया कि वह लोग मुसलमान थे कलमा पढ़ने वाले थे और नमाज़ व रोज़ह करने वाले थे मगर हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शान में बेअदबी का लफ्ज़ बोलने के सबब काफिर हो गये मुसलमान नहीं रह गये ।

और इब्ने अबी शैबा, इब्नुल मुनज़िर, इब्ने अबी हातिम और अबुशैख हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहु के शगिरदे खास हज़रत इमाम

मुजाहिद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत करते हैं कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक श्ख्स की ऊँटनी जो ग़ायब हो गई थी उस के बारे में फरमाया कि वह फ़लाँ जंगल में है उस पर एक आदमी ने कहा उन को ग़ैब की क्या खबर? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने उस आदमी को बुला कर पूछा तो उस ने कहा हम तो ऐसे ही हँसी मज़ाक़ कर रहें थे। उस पर यह आयत अल्लाह की तरफ से उतरी। "और अगर तुम उनसे पूछो तो बेशक वह ज़ुरुर कहेंगे कि हम तो युँ ही हँसी खेल में थे तुम फरमादो क्या अल्लाह उसकी आयतों और उस के रसूल से ठठ्ठा करते थे? बहाने न बनाओ अपने ईमान के बाद तुम काफिर हो गये।" (पारह १० रुकूअ़ १४)

इस आयत में भी खुल्लम खुल्ला फरमाया गया कि कुफ्र का कल्मा ज़बान से निकालने के सबब मोमिन होने के बाद काफिर हो गए। लेहाज़ा यह समझना बहुत बड़ी बेवक़ूफी है कि मुसलमान अल्लाह व रसूल की तौहीन करे तो भी वह मुसलमान ही रहेगा काफिर नही होगा।

और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इनतिक़ाल फरमाने पर कुछ लोगों ने कहा हम कलमा व नमाज पढेंगें और सब कुछ करें गे मगर ज़कात नही देंगे। यानी ज़कात के फ़र्ज होने का अक़ीदा जो दीन की ज़ुरुरी बातों में से है। उस का इन्कार कर दिया तो कल्मह व नमाज़ पढ़ना उन्हें कुछ काम न आया और वह मुरतद हो गये। जैसा कि हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने लिखा

——मुसैलमा के साथी और ज़कात के फ़ज़्र का इन्कार करने वाले मुरतद हुए। (अश्अ़तुल लमआत जिल्द १ पेज न.८३)

और अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बड़ाई का अ़क़ीदा दीन की अहम ज़ुरुरी बातों में से है। लिहाज़ा जो लोग हुज़ूर की तौहीन व बेअदबी कर के उनकी बड़ाई नहीं मानते हैं वह ज़ुरूर मुरतद हैं कलमह और नमाज़ उन्हें मुरतद होने से नहीं बचा सकेगा।

और हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहु से रिवायत है। वह फरमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर थे और हुज़ूर माले ग़नीमत बाँट रहे थे कि ज़ुलखुवैसरा नाम का एक आदमी जो क़बीला बनी तमीम का रहने वाला था आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल इन्साफ से काम लो। हुज़ूर ने फरमाया तेरी दिलेरी पर अफसोस मैं ही इन्साफ नहीं करुंगा तो और कौन इन्साफ करने वाला है। अगर मैं इन्साफ न करता तो तू घाटे में हो चुका होता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इस की गर्दन मार दूं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया

—इसे छोड़ दो। इस के बहुत साथी हैं जिन की नमाजों और रोजों को देखकर तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ो को हकीर समझोगे। वह क़ुर्आन पढ़ें

गे मगर क़ुर्आन उनके ह़लक़ से नहीं उतरेगा (इन देखावटी ख़ूबियों के बावजूद) वह दीन से ऐसे निकले होगें जैसे तीर शिकार से निकल जाता है । (बुखारी शरीफ जिल्द सफहा ५०९)

और हज़रत अबूसईद खुदरी व अनस इबने मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया—अनक़रीब मेरी उम्मत में इखतिलाफ व इफतिराक पाया जाए गा एक गिरोह निकले गा जो अच्छी बातें करे गा लेकिन उनका अमल खराब होगा। वह क़ुर्आन पढ़ेंगें मगर क़ुर्आन उनके ह़लक़ के नीचे नहीं उतरेगा। वह दीन से ऐसे निकल जायें गें जैसे तीर शिकार से निकल जाता है । (मिशकात शरीफ सफहा ३०८)

इन हदीसों से मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्ल्लम के फरमाने के मुताबिक़ बहुत से लोग ऐसे होंगे जिन की नमाज़ और रोज़ों के सामने मुसलमान अपनी नमाज़ और रोज़ों को हकीर समझेंगें। वह लोग क़ुर्आन भी पढ़ें गे मगर इसके बावजूद वह दीन से निकले हुए होंगे । जब वह अहले सुननत या दीन की ज़ुरुरी बातों मे से किसी बात का इन्कार करेंगे तो नमाज़ व रोज़ह और क़ुर्आन का पढ़ना उन्हें बदमज़हब और मुरतद होने से नहीं बचा सके गा।

मुरतद्दों से रिश्ते

अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन की शान में वेअदवी करने वाला मुरतद अहले सुन्नत व जमाअत के यहाँ शादी विवाह करने की ज़्यादा कोशिश करता है इसलिए कि इस तरह वह अपने रिश्तेदार को वेदीन बनाने में आसानी के साथ कामयाव हो जाता है। और सिर्फ नाम का सुन्नी अल्लाह व रसूल और वज़ुर्गानें दीन की महब्वत का झूठा दावे दार उन के दुश्मनों के यहाँ रिश्ता कर लेता है हालांकि उन के साथ शादी करना ज़िना कारी का दरवाज़ा खोलना है इसलिए कि मुरतद के साथ निकाह जाइज़ ही नही होता जैसा कि फ़तावा आलमगीरी जिल्द अव्वल मिसरी सफहा २६३ में है "मुरतद का निकाह मुरतद्दा मुस्लिमह (मुसलमान व मुरतद औरत) और काफिरह असलियह (वह औरत जो असली काफिर हो) किसी से जाइज नहीं ऐसा ही मुरतद्दह का निकाह किसी से नही हो सकता। इसी तरह इमाम मुहम्मद अलैहिर्रहमत व रिज़वान की किताव मवसूत में है।

हैरत है कि सुन्नी अपने बाप दादा के दुश्मनों से रिश्ता नही करता मगर अल्लाह व रसूल और बुज़ुर्गाने दीन के दुश्मनों के यहाँ शादी विवाह करने में कोइ रुकावट नहीं महसूस करता। और जब उनके यहाँ रिश्ता करने से मना किया जाता है तो कहता है कि अब वह ज़माना नही रहा कि उन के यहाँ शादी करने से रोका जाये।

ऐसे लोग जब तरक़्क़ी करें गे तो गैर कौमों के यहाँ रिश्ता करने से भी इनको कोई एतिराज़ न होगा जैसा कि आजकल कुछ नाम निहाद तरक्की वाले मुसलमान गैर मुस्लिमों के यहाँ शादी करने लगे हैं।

और फिर ऐसे लोग जब और भी तरक़्क़ी कर जायेंगे तो अपनी बहन बेटी को भी बीवी बनाकर रख लेने में उनको कोई रुकावट नहीं होगी। और जब मना किया जाएगा तो यही कहेंगे कि अब वह जमाना नहीं रहा। जैसा कि कुछ तरक़्क़ी वाले मुल्क के लोग बहन और बेटी को बीवी बनाकर रखने लगे हैं। खुदा की पनाह

कुछ जाहिल गँवार कहते हैं कि लड़की लाने में कोई हर्ज नहीं अलबत्ता उनको लड़की देना गलत है। हालाँकि लड़की हो या लड़का किसी का रिश्ता उनसे करना जाइज़ नहीं जैसा कि फतावा आलम ग़ीरी के हवाला से अभी गुज़रा।

और फिर लड़की देने में तो सिर्फ़ एक लड़की को मुरतद के हवाले करना है। और मुरतद की लड़की लाने में अपने लड़के और उसकी औलाद को मुरतद होने के रास्ते पर खड़ा करना है इस लिए कि अकसर यह होता है कि जिस सुन्नी लड़का की बीवी मुरतद के यहाँ से लाई गई कुछ दिनों के बाद वह बहकी बहकी बातें करने लगता है। और उसकी औलाद नानी नाना का असर कबूल कर लेती है। मुरतद का ज़बह किया हुआ मुरदारी खाती है, उन्हीं का तौर व तरीक़ा इखतियार करती है यहाँ तक कि कुछ दिनों बाद वह वक़्त आ जाता है कि पूरा घर बेदीन हो जाता है।

खुलासा यह कि मुरतद की लड़की लाना उनको लड़की देने से ज़्यादह खतरनाक है कि इस तरह सुन्नियत को ज्यादा नुक़सान पुहुँचता हैं ।

शैतानी फ़रेब

जब कोई नाम निहाद सुन्नी किसी मुरतद के यहाँ रिश्ता करना चाहता है तो दुनियादार मौलवी शैतानी फ़रेब से काम लेता है यानी तौबा कराके निकाह पढ़ा देता है और पैसे लेकर अपना रास्ता पकड़ता है। और तौबा करनेवाला मुरतद पहले की तरह अपने पुराने तरीक़े पर रहता है।

इसी लिए शरीअ़त का यह हुक्म है कि तौबा के बाद फौरन उस के साथ निकाह नहीं किया जायेगा बल्कि कुछ दिनों उसे देखा जायेगा कि अपने तौबा पर वह क़ाइम है या नहीं ? जैसे कोई फासिक़े मोअ़लिन तौबा करले तो फौरन उसे इमाम नहीं बना दिया जायेगा। फ़तावा रज़विया जिल्द ३ सफ़हा 213 में है कि फ़तावा क़ाज़ी खाँ फिर फ़तावा आलमगीरी में है कि "फ़ासिक़ तौबा करले तब भी उसकी गवाही नहीं कबूल की जाए गी जब तक कि इतना वक़्त न गुज़र जाये कि उस पर तौबा का असर ज़ाहिर हो।"

और आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत फ़ाजिले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हू लिखते हैं कि "अमीरुल मोमिनीन गैज़ुल मोनाफ़िक़ीन इमामुल आदिलीन सय्यिदना उमर फ़ारुक़े आज़म रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने जब "सुबैग" से जिस पर बवज्हे बहसे मुतशाबिहात बद मज़हबी का अनदेशह था बाद ज़रबे शदीद तौबा ली। अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फ़रमान भेजा कि मुसलमान उस के पास न बैठें, उसके साथ खरीद व फ़रोख्त न करें, बीमार पड़े तो उस की अयादत को न जाएें और मर जाए तो उसके जनाज़ा पर हाज़िर न हों।

बतअमीले हुक्मे अहकम (इस बड़े हुक्म के मानने के साथ) एक मुद्दत तक यह हाल रहा कि अगर सौ आदमी बैठे होते और वह आता सब मुतफर्रिक़ (तितर बितर) हो जाते। जब अबू मुसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अरज़ी भेजी कि अब उस का हाल अच्छा हो गया। उस वक़्त इजाज़त फरमाई (फतावा रज़विया जिल्द ३ सफ़हा न. 213)

आला हज़रत ने इस वाक़ेआ के सुबूत मे पाँच हदीसों को नक़ल फरमाया है।

देखिए "सुबैग" सिर्फ आयाते मुतशाबिहात यानी वजहुल्लाह और यदुल्लाह के मिस्ल में बहस किया करता था वह मुरतद नहीं था बल्कि सिर्फ़ उस के बदमज़हब होने का डर था मगर उस के बावजूद हजरते उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तौबा के बाद भी उस का सख्त बाईकाट किया जबतक कि इतमिनान नहीं हो गया।

लेहाजा मुरतद और बदमज़हब को तौबा कराने के बाद बदर्जए औला (ज़ुरुर) कई बरस तक देखा

जायेगा। जब उस की बात चीत और तौर तरीक़ा से खूब इतमिनान हो जाए कि वह अहले सुन्नत व जमाअ़त का आदमी हो गया तब उस के साथ निकाह किया जायेगा वर्ना नहीं।–लिहाज़ा जो शख़्स मूरतद या मुरतद्दह को तौबा कराने के बाद फ़ौरन उन के साथ अपने लड़का लड़की का विवाह करे या जो मौलवी ऐसा निकाह पढ़े मुसलमानों को चाहिए कि इन दोनों का मज़हबी बाईकाट करें और ऐसे दुनियादार मौलवी के पीछे नमाज़ न पढ़ें।–

बदमज़हब और मुरतद कौन ?

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया "आख़िरी ज़माना में कुछ लोग फ़रेब देने वाले और झूट बोलने वाले होंगे। वह तुम्हारे सामने ऐसी बातें लायेंगे जिन को न तुम ने कभी सुना होगा न तुम्हारे बाप दादा ने। तो ऐसे लोगों से बचो और उन्हें अपने क़रीब न आने दो ताकि वह तुम्हें गुमराह न कर दें और न फ़ितना में डालें।" (मुस्लिम, मिशकात सफ़हा न 28)

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इस हदीस शरीफ़ की शरह में लिखते हैं "यानी बहुत लोग होंगें जो मक्कारी व फरेब से उलमा, मशाइख़ और सुलहा बनकर अपने को

मुसलमान का ख़ैर ख़्वाह और मुस्लेह (ठीक रास्ता बताने वाला) ज़ाहिर करें गे ताकि अपनी झूटी बातें फैलायें और लोगों को अपने बातिल अक़ीदों और फ़ासिद खियालों की तरफ़ बुलायें" – (अशिअ़तुल्लमअ़ात जिल्द १ सफ़हा न. १३३)

इस हदीस शरीफ़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आख़िरी ज़माना में जिन फ़रेब देने वालों और झूट बोलने वालों के पैदा होने की खबर दी थी इस ज़माना में उन के कई गिरोह पाये जाते हैं जो मुसलमानों के सामने ऐसी बातें बयान करते हैं कि उन के बाप दादा ने कभी नहीं सुना है यही लोग बदमज़हब और मुरतद हैं । जिन में से चन्द यह हैं ।

चकड़ालवी

यह गिरोह अपने आप को अहले क़ुर्आन कहता है। उन का अक़ीदा है कि हुज़ूर सलल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम सिर्फ़ एलची हैं और बस। खुल्लम खुल्ला सारी हदीसों का इन्कार करता है यानी अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की फ़रमॉबरदारी को नहीं मानता। यह वह बातें हैं जिन को हमारे बाप दादा ने कभी नही सुना था बल्कि उन को खुदाए तआ़ला नेयह हुक्म दिया है कि ऐ ईमान वालो अल्लाह की फ़रमॉबरदारी करो और रसूल की फ़रमॉबरदारी करो (पारह 5 रुकूअ 5)

क़ादियानी

यह लोग मिरज़ा ग़ुलाम अहमद को मेंहदी, नबी और रसूल मानते हैं। हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्ललाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद दूसरे नबी का पैदा होना जाइज़ ठहराते हैं। यह वह बातें हैं जिन को हमारे बाप दादा ने कभी नहीं सुना था। अल्लाह तआला ने उन से फ़रमाया था कि "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम तुम मर्दों में से किसी के बाप नहीं और लेकिन अल्लाह के रसूल और ख़ातमुन्नबीईन हैं" (पारह 22 रुकूअ 2)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन्हें बताया था "मैं खातमुल अमबिया (आखिरी नबी) हूँ मेरे बाद कोई नया नबी नहीं होगा"। (मिशकात शरीफ़ सफ़हा 465)

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नबियों के पैदा होने का सिलसिला ख़त्म हो गया आप ने नुबूवत के दरवाज़ा पर मुहर लगा दी। अब आप के बाद कोई नबी हरगिज़ नहीं पैदा होगा।

राफ़िज़ी (शीआ)

यह गिरोह अपने आप को शीआ कहता है यह लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत ऊमर फारुकेआज़म, हज़रत उस्माने ग़नी और बहुत से सहाबा रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को बुरा भला कहते हैं और उन को खुल्लम खुल्ला गालियाँ देते हैं।— यह वह बातें हैं जिनको हमारे बाप दादा ने कभी नहीं सुना था। उन को क़ुर्आन ने यह बताया था कि "ख़ुदाए तआला ने

सारे सहाबा से भलाई का वादा फ़रमाया है” यानी जन्नत का (पारह २७ रुकूअ १७)

और क़ुर्आन ने उनसे यह इरशाद फ़रमाया था कि “अल्लाहतआला सहाबा से राज़ी है और वह अल्लाह से राज़ी हैं। खुदाए तआला ने उन के लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं। वह लोग उन में हमेशा रहेंगे यही बहुत बड़ी कामयाबी है” (पारह ११ रकूअ १)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन को यह हुक्म दिया था कि मेरे सहाबा की इज़्ज़त करो इस लिए कि वह तुम से बेहतर हैं“ (मिशकात शरीफ़ सफ़हा न. ५५४)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन से यह फ़रमाया था कि ”मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआला से डरो। अल्लाह तआला से डरो। मेरे बाद उन्हे एतिराज़ का निशाना न बनाना“ (तिरमिज़ी मिशकात सफहा ५५४)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्लम ने उन्हें यह हुक्म फ़रमाया था कि ”मेरे सहाबा को गाली न दो।” (बुख़ारी, मुस्लिम मिशशकात सफ़हा न. ५५३)

राफ़ज़ी सहाबा को गालियाँ देने के इलावह और भी बहुत से कुफ़्री अक़ीदे रखते हैं यहाँ तक कि उन में के कुछ फ़िरक़े हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़ुदा क़रार देते हैं। तफ़सील के लिए तुहफए इस्ना

अशरिय्यह देखें ।–

खारिजी

इस गिरोह को यज़ीदी भी कहा जाता है। यह लोग हज़रत अली रज़ियललाहु तआला अन्हु को बुरा भला कहते हैं । रसूल के निवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बाग़ी क़रार देते हैं । और उन की शान में तरह तरह की बेअदबी करते हैं ।

और यज़ीद जिस ने कअबए मुअज़्ज़मह और रौज़ए मुनौवरा की सख़्त बेहुरमती की मस्जिदे नबवी में घोड़े बंधवाए जिन की लीद और पेशाब मिम्बरे अक़दस पर पड़े, हजारों सहाबा और ताबिईन को बेगुनाह शहीद किया । मदीना तय्यबह की पाक दामन पारसा औरतों को तीन रोज़ अपने ख़बीस लश्कर पर हलाल किया और जिगर पारए रसूल फ़रज़न्दे बतूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तीन दिन बे आब व दाना (दाना और पानी के बगैर) रख कर मैदाने करबला में प्यासा ज़बह किया और फिर शहादत के बाद उनके जिस्म पर घोड़े दौड़ाये गये यहाँ तक कि उनकी हड्डियाँ चकना चूर हो गईं । (देखिए फ़तावा रज़विय्यह जिल्द न. 6 सफ़हा 107) मगर जिस ने यह सब कुछ किया ऐसे यज़ीद ख़बीस को यह ख़ारजी जन्नती करार देते हैं और उसे अमीरुल मूमिनीन (मुसलमानों का चुना हाकिम) व रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं ।

नोट :– यजीद के जन्नती होने के बारे में खारिज़ी यज़ीदी जो बुखारी शरीफ़ की हदीस पेश करते हैं उस का

जवाब हमारी किताब खुतबाते मुहर्रम सफ़हा 345 पर देखें । अलअमजदी

वहाबी देव बन्दी

इस गिरोह का अक़ीदा यह है कि जैसा इल्म हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को हासिल है ऐसा इल्म तो बच्चों पागलों और जानवरों को भी है। जैसा कि देववनदियों के पेशवा (अगुवा) मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए कुल इल्मे ग़ैब का इन्कार करते हुए सिर्फ़ कुछ इल्मे ग़ैब को सावित किया फिर कुछ इल्मे ग़ैब के बारे में यूँ लिखा कि "इस में हुज़ूर की क्या तख़सीस है ऐसा इल्म तो ज़ैद वअमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम के लिए भी हासिल है" (हिफ़्जुलईमान सफ़्हा न. ८)

नोट :– नये एडीशन में यह इबारत कुछ बदल दी गई है लेकिन सारे वहावी देवबन्दी उसी पुरानी इबारत को सहीह मानते हैं लिहजा सिर्फ इबारत बदलने से उनका कुफ्र नहीं उठ जायेगा ।

इस गिरोह का एक अक़ीदह यह भी है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम आख़िरी नबी नहीं हैं। आप के बाद दूसरा नबी हो सकता है जैसा कि मौलवी क़ासिम नानोतवी दारुल ऊलूम देवबन्द की बुनियाद रखने वाले ने लिखा है कि "अवाम के खयाल मे तो रसूलुल्लाह का ख़ातम होना बयीं मअ़ना है कि आप का ज़माना अम्बियाये साबिक़ के ज़माने

के बाद और आप सब में आख़िरी नबी हैं मगर अहले फ़हम पर रोशन होगा कि तक़द्दुम या तअख़्ख़ुर ज़माना में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं" (तहज़ीरुन्नास सफ़हा न. 3)

इस एबारत (लेख) का ख़ुलासा यह है कि ख़ातमुन्नबीईन का यह मतलब समझना कि आप सब में आख़िरी नबी हैं यह ना समझ और गंवारों का खयाल है ।

और आगे फिर यूं लिखा कि "अगर बिल फ़र्ज बाद ज़मानए नबवी सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमिय्यते मुहम्मदी में कुछ फ़र्क न आएगा" (तहज़ीरुन्नास सफ़हा न. 28)

इस इबारत का ख़ुलासा यह है कि हुज़ूर सल्लललाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के बाद दूसरा नबी पैदा हो सकता है। ख़ुदा की पनाह

इस गिरोह का एक अक़ीदा यह भी है किशैतान व मलकुलमौत के इल्म से हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इल्म कम है। जो शख़्स शैतान व मल कुलमौत के लिए बहुत इल्म माने वह मोमिन मुसलमान है लेकिन हुज़ूर सल्लललल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के इल्म को बहुत ज़्यादा मानने वाला मुशरिक बेईमान है जैसा कि इस गिरोह के पेशवा मौलवी खलील अहमद अम्बेठी ने लिखा कि "शैतान व मलकुलमौत को यह उसअ़त नस से साबित हुई फ़ख़रे आलम के उसअते इल्म की कौन सी नस्से क़तई है जिस से तमाम

नुसूस को रद करके एक शिर्क साबित करता है।"
(बराहीने क़ातिआ सफ़हा न. 51)

और इन लोगों का एक अकीदा यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम मर कर मिट्टी में मिल गए जैसा कि तक़वियतुल ईमान सफ़हा 79 पर है।

ऊपर लिखे गये अक़ीदों के इलावा और भी इस गिरोह के बहुत से कुफ़्र वाले अकीदे हैं। इस लिए मक्का मुअज़्ज़मा मदीना तैयबह, हिन्दुसतान, पाकिस्तान, बर्मा और बंगलादेश के सैकड़ों आलिमों और मुफ़तियों ने इन लोगों के काफ़िर व मुरतद होने का फ़तवा दिया है। तफसीली मालूमात के लिए फ़तावा हुसामुल हरमैन और अस्सवारिमुल हिन्दियह को पढ़ें।

वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिद

यह गिरोह अपने आप को अहले हदीस कहलाता है जो वहाबियों देव बन्दियों की एक शाख है। उनके तमाम कुफ़्र में शरीक है और यह लोग हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा और हज़रत इमाम शफ़िई वग़ैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को बुरा भला कहते हैं।

और इन लोगों का एक अक़ीदा यह भी है कि हज़रत ग़ौसे आज़म शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़तियार काकी हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर, हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया, हजरत मखदूम अशरफ जहांगीर सम्नानी कछौछवी हज़रत इमाम रब्बानी शेख

अहमद सरहिन्दी मुजद्दिद अल्फ़े सानी हजरत शैख अब्दुल हक़ मुहाद्दिस देहलवी बुख़ारी और हज़रत मख़दूम महाइमी वग़ैरा सभी बुज़ुर्गानेदीन रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन गुमराह व बद मज़हब थे इसलिए कि यह सब के सब मुक़ल्लिद थे और किसी इमाम की तक़लीद उनके नज़दीक गुम्राही व बद मज़हबी है।

तब्लीग़ी जमाअत

इस गिरोह के भी सारे अक़ीदे वही हैं जो वहाबियों देव बन्दियों के हैं। मगर यह लोग अहले सुन्नत व जमाअ़त को अपने जैसा अकीदह वाला बनाने के लिए फ़रेब से सिर्फ कलमह व नमाज़ का नाम लेते हैं। और जब कोई सुन्नी धोके से उन की जमाअ़त में शामिल होकर उनके ज़ाहिरी अमल का असर क़बूल कर लेता है तो फिर यह लोग आसानी के साथ उसे पक्का वहाबी देव बन्दी बनाकर अल्लाह और उस के रसूल की बारगाह का बेअदब बना लेते हैं।

मौदूदी जमाअत

यह गिरोह अपने आप को जमाअते इस्लामी कहलाता है। यह भी वहाबियों देव बन्दियों की एक शाख है यानी बुनयादी तौर पर दोनों एक हैं। इसके इलावा इस जमाअत को बनाने वाले अबुल आ़ला मौदूदी ने तमाम नबी खास कर हजरत नूह अ़लैहि स्सलाम, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम और हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम यहाँ तक की सारे नबियों के सरदार

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की शान में बेअदबी की है ।

और तमाम सहाबा खास कर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारुक, हज़रत उस्मान गनी, और हज़रत खालिद इब्ने वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर नुक़्ता चीनी करके उन की तौहीन की है। और राफ़िज़ीयों (शीओं) को खुश करने के लिए वही लिखने वाले हुज़ूर के सहाबी हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात पर ऐसे इलज़ामात लगाये हैं कि मुसलमान तो मुसलमान काफ़िर भी शरमा जाए। और उम्महातुल मूमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा व हज़रते हफ़्सा रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा को ज़ुबान दराज़ क़रार दिया है

और दीन के बड़े–बड़े आलिम ख़ास कर हज़रते इमाम गज़ाली, हज़रते इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफे सानी और हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी पर नुक़्ता चीनी करके उन की बेअदबी की है । यहाँ तक कि कुर्आन करीम के बारे में लिखा कि वह नजात के लिए नहीं बल्कि हिदायत के लिए है ।– जिस का मतलब यह हुआ कि जो शख़्स नजात चाहे वह कोई और किताब तलाश करे । खुदा की पनाह

नोट :– अबुल आला मौदूदी की इन सारी गुस्ताख़ियों और बेअदबियों की तफ़सील किताबों के नाम और उनकी जिल्द व सफहा के हवालों के साथ जानने के लिए किताब "जमाअते इस्लामी" लेखक हज़रत अल्लामह अरशदुल क़ादिरी क़िबला और किताब "दो भाई मौदूदी और

खुमैनी" को पढें ।

इन गुस्ताखियों के इलावा मौदूदियों का अकीदा है कि कज़ा व कद्र (तकदीर) पर ईमान लाना कोई ज़ुरुरी नहीं जैसा की उनकी किताब "मस्लए क़ज़ा व क़द्र" सफ्हा 13 पर लिखा है कि "मेरे नज़दीक मस्अलह कज़ा व कद्र ईमान का ज़ुज नहीं है। उसकी हैसियत एक मसअलह की है"

हालांकि कज़ा व कद्र (तकदीर) का मस्अलह ईमान का जुज़ है इस लिए कि ईमान मुफस्सल में है "वलकदीर खैरिही व शररिही मिनल्लाहि तआला" यानी मैं इस बात पर ईमाम लाया कि तक़दीर की अच्छाई और बुराई अल्लाह की तरफ़ से है । और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तकदीर से इन्कार करने वालों को इस उम्मत का मजूस बताया ।

और फरिशते नूर से पैदा किए गये हैं । वह अल्लाह के मासूम बन्दे हैं हर किस्म के छोटे बड़े गुनाह से पाक हैं और वह लोग वही करते हैं जो अल्लाह का हुक्म होता है। उसके हुक्म के खिलाफ़ वह किसी हाल में कुछ नहीं करते । और मुशरिकों के देवी देवता उनके बुत और माबूद हैं जिनको वह पूजते हैं । क़ुर्आन के हुक्म के मोताबिक मुशरिकीन और उन के बुत जहन्नम के इंधन हैं ।

मगर मौदूदियों का अक़ीदा है कि फ़रिश्ते और देवी देवता एक ही हैं जैसा कि उन की किताब " तजदीदे इहयायेदीन सफ्हा 14 पर लिखा है" कि इस्लामी

इस्तेलाह (बोल चाल) में जिनको फरिश्तह कहते हैं वह तकरीबन वही चीज़ है जिस को यूनान और हिन्दुस्तान वगैरा ममालिक के मुशरिकीन ने देवी देवता करार दिया है।

और मौदूदियों का अकीदा है कि तफ़सीर और हदीस के पुराने ज़खीरे सब बेकार हो गये जैसा कि "तनकीहात" सफ्हा 126 पर लिखा है कि "कुर्आन और सुन्नते रसूल की तालीम सब पर मुक़द्दम है लेकिन तफसीर व हदीस के पुराने ज़खीरों से नहीं"।

और तमाम अम्बिया व औलिया खुदाए तआला के यहाँ गुनहगारो के शफीअ और सिफारशी हैं और उन सब के आका रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शफाअते कुबरा (बड़ी सिफारिश) के मरतबे से नवाज़े गये हैं लिहाज़ा इन से मदद माँगना और इन की ताजीम करना जाइज़ है और नज़्र व नियाज़ पेश करना भी ज़ाइज़ है।

लेकिन मौदूदियों का अक़ीदा है कि किसी को शफीअ और सिफारशी मान कर उनसे मदद माँगना उन को खुदा बनाना हो गया। यानी उन से मदद माँगने वाले मौदूदयों के नज़दीक मुशरिक हो गये जैसा कि उन की किताब "कुर्आन की चार बुनयादी इस्तेलाहें" सफ्हा 22 पर लिखा है कि "किसी को खुदा के यहाँ सिफारशी करार देकर उससे मददकी इल्तेजा करना और उस के साथ मरासिमे तअज़ीम व तकरीम बजालाना और नज़्र व नियाज़ पेश करना उस को इलाह (मअबूद और खुदा)

वनाना है ।

अल्लाह के नाम पर जानवर ज़बह करके उस का सवाव वुज़ुर्गों को पहुँचाना जाइज़ है और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कब्रों की ज़ियारत का हुक्म फ़रमाया और अपनी कब्रे अनवर की ज़ियारत करने वालों के लिए शफ़ाअत के वाजिव होने का मुज़दा (खुशखवरी) सुनाया।

लेकिन मौदूदियों का अक़ीदा है कि वुज़ुर्गाने दीन के मज़ारो की ज़ियारत करना मज़ारात का हज करना है और अल्लाह के नाम पर जानवर ज़वह कर के वुज़ुर्गों को सवाव पहुँचना गैरुल्लाह के लिए कुर्वानी हो गई। और वुज़ुर्गों के मज़ार की ज़ियारत करना कत्ल और ज़िना (वदकारी) के गुनाह से वदतर है जैसा कि उन की किताव "तजदीदे इहयायेदीन" सफ्हा 93 पर लिखा कि "तुम गैइल्लाह के लिए कुर्वानियाँ करते हो और मदार साहव और सालार साहव की कब्रों का हज करते हो यह तुम्हारे वदतरीन अफ़आल (काम) हैं।

और इसी किताव "तजदीदे इहयायेदीन" के सफहा 97 पर लिखा है कि "जो लोग हाजतें तलव करने के लिए अजमेर या सालार मसऊद की कब्र या ऐसे ही किसी दूसरे मकामात पर जाते हैं वह इतना वड़ा गुनाह करते हैं कि कत्ल और ज़िना (वदकारी) का गुनाह इस से कम है।

और मौदूदियों का अक़ीदा है कि किसी गोशे में वैठ

कर अल्लाह अल्लाह करते रहना इबादत नहीं जैसा कि उन की किताब "हकीकते सौम व सलात" सफ्हा 18 पर लिखा है कि "दुनिया को छोड़ कर कोनों और गोशों में जा वैठना और तसवीह हिलाना इबादत नहीं ।

सुलह़ कुल्ली

यह वह गिरोह है जो अहले सुलह कुल्ली व जमाअत के इलावा चक्ड़ालवी, कादियानी, राफज़ी (शीअह) खारिजी, बहावी देववन्दी, वहावी गैर मुकल्लिद , तवलीगी जमाअत, मौदूदी जमाअत और नैचरी वगैरा सारे गुमराह व मुरतद फ़िरको को भी हक़ समझता है, सव के यहाँ शादी विवाह करने और हर एक के पीछे नमाज पढने को जाइज़ कहता है किसी को नारी और जहन्नमी नहीं ठहराता उस का अकीदा है कि कलमा व नमाज पढने वाला हर मज़हव जन्नती है । हालाँकि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस है कि मेरी उम्मत 73 फ़िरकों (गिरोहो) में वट जाए गी उन में सिर्फ़ एक मजहव जन्नती होगा वाकी सब जहन्नमी होंगे। (तिर्मिजी, मिश्कात सफ्हा न. ३०)

अल्लाह की लानत

चक्ड़ालवियत कादियानियत राफ़जियत, वहावियत देववन्दियत, और गैर मुकल्लिदीयत वगैरा अहले सुन्नत व जमाअत के खिलाफ जितने मजहव हैं इस ज़माना के ज़वरदस्त फितने हैं । हर पढे लिखे लोगों पर और आलिमों व पीरों पर खास कर लाजिम है कि वह अवामे अहले सुन्नत को इन फितनों के वारे में वतायें और

सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक उन के यहाँ उठने बैठने से रोकें और उनके यहाँ शादी विवाह करने से सख्ती से साथ मना करें । अगर वह ऐसा नहीं करें गे और किसी मस्लहत से चुप रहेंगे तो अल्लाह तआला और उस के मलाइका (फरिश्तों) और सब लोगो की लानत के मुस्तहक होंगे और उन का कोई फर्ज व नफ्ल कबूल न होगा जैसा कि हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जब फितने जाहिर हों और हर तरफ बेदीनी फैलनेलगे और ऐसे मौका पर आलिमे दीन अपना इल्म जाहिर न करे और अपनी किसी मस्लहत या फ़ाइदा की लालच में चुप रहे । तो उस पर अल्लाह की और तमाम फरिश्तों की और सारे इन्सानों की लानत है । अल्लाह न उसका फर्ज कबूल करेगा और न उस की नफ्ल (सवाइके मुहरिकह सफ्हा 2 अलमलफूज जिल्द 4 सफ्हा न. 4)

हुज़ूर के रास्ते पर नहीं

जो लोग कि मुसलमानो को फितनों में पड़ते हुए देख रहे हैं कि वह बदमजहबों और मुरतदों के यहाँ शादी विवाह कर के गुमराह व मुरतद हो रहे हैं और अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह के बेअदब बन रहे हैं मगर वह लोग कुदरत के बावजुद अवाम में मकबूलित हासिल करने, ज्यादा से ज्यादा आमदनी हाने या और किसी फाइदा के लिए चुप रहते हैं और ऐसी जबरदस्त बुराई कि जिस से लोग कुफ्र में पड़ जाते है नहीं रोकते वह बिला शुबहा हुजूर सय्यदे

आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रास्ते पर नहीं हैं जैसा कि तिरमिजी में हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से हदीस शरीफ रिवायत है कि "जो मुसलमान हमारे छोटों पर मेहरबानी न करे, हमारे बड़ों की ताजीम न करे, अच्छी बात का हुक्म न दे और बुरी बात से न रोके वह हमारे रासता पर नहीं (मिश्कात शरीफ सफहा 423)

और ऐसे लोग नायबे रसूल नहीं सिर्फ नाम के आलिम हैं इसलिए कि रसूल लोगों को गुम्राही व बदमजहबी से बचाने और उन को सहीह रास्ता पर चलाने की फिक्र में दिन रात लगा रहता है। लिहाजा जो आलिम उनके तरीके पर चले और उनका रास्ता इख्तियार करे वही नायबे रसूल है वर्ना दुनिया कमाने के लिए वह सिर्फ नाम का आलिम है।

सब से कमज़ोर ईमान वाला

अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बात से रोकना मुसलमानों पर वाजिब है जैसा कि हजर शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते है कि "अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना वाजिब है इसपर उम्मत का इजमाअ (सहमति) है, (अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 सफहा 173)

लिहाजा अगर काई हाथ और जबान से बुराई न रोक सके और सिर्फ दिल से बुरा जाने तो वह सब से

कमजोर ईमान वाला है । जैसा कि मुस्लिम शरीफ में हज़रत अबूसईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस शरीफ रिवायत है कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि "जो श्ख्स कोई बात शरअ के खिलाफ देखे तो उसे अपने हाथ से रोक दे और अगर हाथ से रोकने की कुदरत न हो तो जुवान से मना करे। और अगर ज़वान से भी मना करने की कुदरत न हो तो दिल से बुरा जाने और यह सब से कमजोर ईमान है ।" (मिश्कात शरीफ सफ्हा 436)

बुराई न रोकने पर अज़ाब

वहुत से मुसलमान इस वेवकूफी मे पड़े हुए है कि अगर लोग बुरा काम कर रहे हैं तो वह उस का जवाव देंगे । हम से क्या गरज़ ? और यह सोच कर वह चुप रहते हैं कुछ नहीं वोलते। वल्कि कुछ लोग तो वुराई रोकने वाले के खिलाफ हो जाते है। और कहते हैं आप से क्या मतलव ? हालॉकि उस बुराई से रोकना सब लोगों पर लाज़िम है। अगर क़ुदरत के वावजूद नहीं रोकेंगे तो सब पर अजाब नाज़िल होगा । जैसा कि इब्ने अदी किनदी रजियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस शरीफ रिवायत है कि हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि" अल्लाह तआला सब लोगों को बाज़ (कुछ) लोगों के अमल के सवव अज़ाव नहीं देता मगर जवकि वह अपने दरमियान बुरे काम होते हुए देखें और उसे रोकने की ताकत रखते हुए न

रोकें। अगर उन्होंने ऐसा किया तो खुदाये तआला आम और खास सब को अज़ाब देगा।(मिश्कात शरीफ सफहा 438)

यानी अगर कुछ लोग कोई गुनाह करें तो उस के सबब खुदाये तआला दूसरो पर अज़ाब नहीं फरमाता लेकिन बुराई देख कर चुप रहना और उसे न मिटाना ऐसा गुनाह है कि उस के सबब बुराई करने वाले और चुप रहने वाले दोनों पर अज़ाब नाज़िल फरमाता है। बुराई करने वाले पर बुराई के सबब और चुप रहने वालों पर चुप रहनें के सबब। और तिरमिज़ी शरीफ में हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआल अन्हु से हदीस शरीफ रिवायत है कि नबीये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलेहि वसल्लम ने फरमाया "कसम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है तुम ज़ुरूर अच्छी बातों का हुक्म करना और बुरे कामों से मना करते रहना। वरना जल्द ही अल्लाह तआला तुम पर अपने पास से अज़ाब भेज देगा। फिर तुम उस से दुआ करोगे तो तुम्हारी दुआ कबूल नहीं की जाये गी। (मिश्कात शरीफ सफहा 436)

हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाह तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं "यानी दूसरे अज़ाब और मुसीबते दुआ से दूर हो सकती हैं लेकिन अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बात से रोकना छोड़ देने के सबब जो अज़ाब नाज़िल होगा वह दूर नहीं होगा और दुआ उस के बारे में कबूल न होगी।" (अशिअतुललमआत जिल्द 4 सफहा न. 175)

और तिर्मिज़ी व इबने माजा की हदीस है हज़रते अबूबकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुना कि "लोग जब कोई बुरा काम देखें और उस को न मिटायें तो जल्द ही खुदाये तआला उन सब को अपने अज़ाब मे मुब्तिला करे (डाले) गा।" (मिश्कात शरीफ सफ्हा न. 436)

और अबू दाऊद व इब्ने माजा की हदीस है। हजरते जरीर इब्ने अब्दुल्लाह रिजयल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि "किसी कौम का कोई आदमी उन के दरमियान गुनाह करता हो और वह उसे रोकने की ताकत रखते हों मगर न रोकें तो खुदाये तआला उन सब पर अज़ाब भेजेगा इस से पहले कि वह मरें।" (मिश्कात शरीफ सफ्हा 437)

हज़रत शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि "इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि अच्छी बात के हुक्म देने और बुराई से रोकने को छोड़ देने के सबब दुनिया में भी अज़ाब होगा और अखिरत में भी। व खिलाफ दूसरे गुनाहों के कि दुनियों में उन पर अज़ाब नहीं। (अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 सफ्हा 177)

वैहिक़ी शरीफ में हज़रत जाबिर रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया "खुदाये

तआला ने जिबरईल (एक फरिश्ता) अलैहिस्सलाम को हुक्म फरमाया कि फुलाँ शहर को जो ऐसा और ऐसा है उस के रहने वालों समेत उलट दो। जिबरईल अलैहिस्स्सलाम ने अर्ज किया ऐ मेरे परवरदिगार! इन रहने वालो में तेरा फुलाँ बनदा भी है जिस ने एक मिनट भी तेरी ना फरमानी नहीं की है। तो अल्लाह तआला ने फरमाया मैं फिर हुक्म देता हूँ कि उस पर और कुल रहने वालों पर शहर को उलट दो इस लिए कि उस का चेहरा गुनाहों को देखकर मेरी खुशी के लिए एक मिनट भी नहीं बदला। (मिश्कात शरीफ सफ्हा न. 439)

हज़रत शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी बुखारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि "गुनाहों को देख कर खुदाये तआला की खुशी के लिए चेहरा का रंग न बदलना बहुत बड़ा गुनाह है इसी लिए अल्लह तआला ने उस नेक बन्दे पर अज़ाब देने का हुक्म पहले फरमाया और गुनाह करने वालो पर अज़ाब देने का हुक्म बाद में। (अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 स. 183)

और किसी के चुप रहने पर जब कि लोग यह कहने लगे कि फुलाँ तो इतने बड़े आलिम और बुजुर्ग हैं मगर वह किसी को नहीं मना करते। एक आप ही हैं रोकने और मना करने वाले। क्या वह आलिम नहीं हैं। अगर यह बात गलत होती तो वह भी ज़ुरुर मना करते—इस सूरत में चुप रहने वाले और बुराई को दे ख कर न रोकने वाले पीर व मौलवी और ज़्यादा अज़ाब के लाइक़ होंगे।

तरह तरह के फ़रेब (धोखे)

आज कल अहले सुन्नत व जमाअत के यहाँ जलसे और कानफ्रेनसें बहुत होती हैं जिनमें ज्यादा तकरीरें ड्रामाई और रसमी होती हैं। ईमान के डाकू जिस रास्ते से सुन्नियों के घरों में घुस कर उनके ईमान पर डाका डाल रहे हैं और सुन्नियत को ज़बरदस्त नुकसान पहुँचा रहे हैं उस रास्ता को बन्द नहीं करते। यानी बदमज़हबों के साथ उठने बैठने से नहीं रोकते और न उनके यहाँ शादी विवाह करने से मना करते है बल्कि बाज़ मौलवी और पीर [illegible] उन के यहाँ रिश्ता कर लेते हैं जिसे सुन्नी [illegible] सनद बनाकर बदमजहबों के यहाँ शादी विवाह करते हैं और थोड़े दिनों में घर के घर गुमराह व बदमजहब हो जाते हैं।

इन हालात मे अगर कहीं कोई आलिमेदीन उस बुराई के खिलाफ कुछ बोलता या लिखता है तो नसीहत कबूल करने की बजाय उस से दुश्मनी करते हैं और तरह तरह के फरेब से उस की हक़ बातों का असर खत्म कर देते हैं। लोगों को बहकाते हैं। न खुद अमल करते हैं और न दूसरों को अमल करने देते हैं।

कहीं काई उस की हक़ गोई को ऐब जूई करार देता है और उलटे उसी को गुनहगार ठहराता हैं। जबकि छुपे हुए ऐबों को खोजना ऐब जूई है। और जो बुराई खुल्लम खुल्ला की जाती हो उस के खिलाफ बोलना हक़ गोई है ऐब जूई नहीं।

और कुछ लोग कहते हैं कि यह गीबत है हालाँकि जो बुराई कोई खुल्लम खुल्ला करता है उस का लोगों मे चरचा करना गीबत नहीं । फकीहे आजमे हिन्द हज़रत सदरुश्शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि "जो शख्स अलानिया (खुल्लम खुल्ला) बुरा काम करता हो और उस को इस बात की कोई परवा नहीं कि लोग उसे क्या कहें गे तो उस शख्स की उसे बुरी हरकत का बयाना करना गीबत नहीं मगर उस की दूसरी बातें जो ज़ाहिर नहीं हैं उन का जिक्र करना गीवत है । हदीस शरीफ में है कि जिस ने हया का हिजाब अपने चेहरे से हटा दिया उस की ग़ीवत नहीं । (बहारे शरीअत हिस्सा 16 बयान गीबत वहवालए रद्दुलमुहतार)

और कुछ लोग कहते हैं कि वह उर्स में औरतों को आने से क्यों नहीं रोक पाते । यानी जब वह आलिम उर्स में औरतों को आने से रोकने पर कामियाब हो जाये गा तब वह बदमजहबों और मुरतद्दो से रिश्ता नहीं करें गें वनना उन के यहाँ वह बराबर शादी विवाह करते रहें गे दीन और अक़्ल पर रोना चाहिए।

और कुछ लोग कहते हैं कि वह आलिम बड़े हक़ गो हैं तो आकर औरतो को मजार से हटायें। ऐ काश! ऐसे हक गोई का माना जानते । और अगर जानते हैं तों जाहिल न बनते कि हक गोई का माना है हक़ बात कह देना उस के माना मज़ार से औरत हटाना नहीं है ।

और कुछ लोग यह कहते हुए श्ज़र आते हैं कि जब उस में खुद फुलाँ फुलाँ बुराई पाई जाती है तो वह दूसरों को बुराईयों से रोकने का हक नहीं रखता—ऐसे लोगों को

मालुम होना चाहिए कि उस पर दो चीजें वाजिब हैं। खुद बुराइयों से बचना और दूसरों से बचने के लिए कहना। तो एक वाजिब के छुटने से दूसरे वाजिब का छोड़ना जाइज़ नहीं – हज़रत शैख अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि "अच्छी बात के करने का हुक्म देने के वाजिब होने में खुद हुक्म देने वाले का भी अमल करने वाला होना शर्त नहीं बल्कि बगैर अमल भी अचछी बात का हुक्म देना जाइज़ है इस लिए कि अपने आप को अच्छी बात का हुक्म देना वाजिब है और दूसरे को अच्छी बात के करने का हुक्म देना दुसरा वाजिब है। अगर एक वाजिब छूट जाये तो दूसरे वाजिब को छोड़ना हरगिज़ जाइज़ न होगा । और जो कुर्आन मजीद पारा 29 में है कि "वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो।"तो अगर इसे अच्छी बात का हुक्म करने और बुरी बात से रोकने के बारे में मान भी लिया जाये तो अमल न करने पर डाँट फटकार है न कि कहने पर। (अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 सफ्हा न. 173)

और फिर लिखते हैं कि दूसरों को अच्छी बात का हुक्म करना और बुराई से रोकना और खुद उस पर अमल न करना अजाब का सबब है लेकिन यह अज़ाब अमल न करने की वजह से है अच्छी बात का हुक्म देने और बुराई से रोकने की वजह से नहीं है । इस लिए कि अगर यह भी नहीं करेगा यानी अच्छी बात का हुक्म नहीं देगा और बुराई से नहीं रोकेगा तो दो वाजिब छोड़ने के सबब और ज्यादा अज़ाब के लाइक होगा। (अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 सफ्हा 175)

फिर कोई अक्ल वाला यह बात हरगिज नही कहेगा मैं हक बात इस लिए नही मानूँगा कि उस का कहने वाला खुद इस पर नही चल रहा है। इस की मिसाल बिल्कुल ऐसी है जैसे कोई लोगों से तन्दुरूस्ती का तौर तरीका बयान करे और सुनने वाले देखें कि यह शख्स खुद तन्दुरूस्ती के तौर तरीके पर अमल न करने के सबब अपनी तन्दुरूस्ती बरबाद कर रहा है तो वह लोग यह नही कह सकते कि तुम खुद चूँकि इस तरीकों पर अमल न करने के सबब अपनी तन्दुरूस्ती खराब कर रहे हो इसलिए हम तन्दुरूस्ती के यह कायदे और कानून कबूल न करेंगे। अलबत्ता जिसे अक्ल से कोई हिस्सा न मिला हो वह ऐसी बात कह सकता है।

हजरत शैख सादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि आलिम की बात दिल से सुनो अगर्चे वह खुद बे अमल हो और सोये हुए को सोया हुआ आदमी नही जगा सकता। मुखालिफ का यह कहना गलत है। आदमी को चाहिये कि अगर दीवार पर नसीहत लिखी तो उसे भी कबूल कर ले।

दुआ है कि अल्लाह तआला सारे मुसलमानों को अपने महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सहाबा और बुजुर्गो की सच्ची मुहब्बत अता फरमायें और उन के दुश्मनों से दूर रहने की तौफीक बख्शे। आमीन! बिजाहि हबीबि क सयइदिल मुरसलीन सलवातुल्लाहि तआला व सलामुहु अलैहि व अलैहिम अजमईन।

जलालुद्दीन अह़मद अमजदी

१२ रबीउल आखर १४१० हिजरी

१२ नवम्बर १९८९ ईसवी